https://kvs.gov.in/ | @KVSHQ | @KVS_HQ | @kvshqr | KVS HQ

नई दिल्ली | के.वि.सं. (मु.)

संस्करण: नवम्बर 2026
वर्ष-2, अंक- 5
4 Pages

केन्द्रीय विद्यालय क्रॉनिकल

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

** यह 'केन्द्रीय विद्यालय क्रॉनिकल' के अंग्रेज़ी संस्करण का हिंदी अनुवाद है।*

संपादकीय

रंग अनेक, पहचान एक
राष्ट्रीय एकता पर्व में साकार हुआ विविधता में एकता का संदेश

भारत की सबसे बड़ी ताकत उसकी विविधता है और सबसे बड़ी उपलब्धि इस विविधता को एकता के सूत्र में पिरोना है। इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने राष्ट्रीय एकता पर्व 2026 का आयोजन किया। इस पर्व में के.वि.सं. के सभी 25 संभागों से चुने गए विद्यार्थियों ने एक मंच पर आकर भारत की समृद्ध संस्कृति, कला और राष्ट्रीय एकता का उत्सव मनाया।

केन्द्रीय विद्यालयों की एक खास पहचान यह है कि हर विद्यालय अपने आप में एक लघु भारत है। यहाँ अलग-अलग राज्यों, क्षेत्रों, भाषाओं और संस्कृतियों से जुड़े बच्चे एक साथ पढ़ते हैं। इस तरह केन्द्रीय विद्यालय भारत की विविधता में एकता का सजीव उदाहरण हैं। यहाँ बच्चों को अलग-अलग परंपराओं को समझने, दूसरों के विचारों का सम्मान करने और देश के प्रति अपनापन रखने का अवसर मिलता है। के.वि.सं. केवल पढ़ाई में अच्छी उपलब्धियां हासिल करने पर ही नहीं, बल्कि बच्चों में भारतीयता, आपसी सम्मान, समानता और देश के प्रति गर्व की भावना विकसित करने पर भी ध्यान देता है।



राष्ट्रीय एकता पर्व के माध्यम से दो महत्वपूर्ण कार्यक्रमों—'एक भारत श्रेष्ठ भारत' और 'कला उत्सव' को एक मंच पर लाया गया है। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत विद्यार्थियों को देश के अलग-अलग राज्यों की संस्कृति, भाषा, कला और रहन-सहन को जानने का अवसर मिलता है। वहीं, 'कला उत्सव' बच्चों को अपनी कला और रचनात्मक प्रतिभा दिखाने का मंच देता है। इन दोनों कार्यक्रमों के मेल से बच्चों को विभिन्न संस्कृतियों को जानने, एक-दूसरे से जुड़ने और नई बातें सीखने का रोचक अवसर मिलता है।

देशभर से आए प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की भागीदारी इस आयोजन को और खास बनाती है। नृत्य, संगीत, कला और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के अलावा, इस पर्व में बच्चों को नए मित्र बनाने, एक-दूसरे की संस्कृति को समझने और देश को एक सूत्र में बाँधने वाली समान परंपराओं को जानने का अवसर मिलता है। हर प्रस्तुति और प्रदर्शनी भारत की अनोखी सांस्कृतिक विविधता की एक झलक दिखाती है।

यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सोच के अनुरूप भी है। इस नीति में बच्चों के सर्वांगीण विकास, गतिविधियों के माध्यम से सीखने, पढ़ाई में कला को जोड़ने, संस्कृति की समझ बढ़ाने और अच्छे संस्कार विकसित करने पर जोर दिया गया है। राष्ट्रीय एकता पर्व इन सभी उद्देश्यों को एक मंच पर लाकर शिक्षा, संस्कृति और रचनात्मकता को जोड़ता है।

इस पर्व की असली सफलता केवल प्रस्तुतियों या पुरस्कारों तक सीमित नहीं है, बल्कि उन अच्छे विचारों और संस्कारों में है, जिन्हें विद्यार्थी अपने विद्यालयों में वापस लेकर जाते हैं। यह आयोजन के.वि.सं. की उस सोच को दर्शाता है, जिसके तहत बच्चों का हर क्षेत्र में विकास किया जाता है, ताकि वे आत्मविश्वास से भरपूर और रचनात्मक बनें। साथ ही, वे भारतीय मूल्यों को अपनाएं, अपनी संस्कृति पर गर्व करें और दूसरों की परंपरा का सम्मान करें।

राष्ट्रीय एकता पर्व केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भारत की एकता, संस्कृति और आपसी भाईचारे का उत्सव है। यह 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को मजबूत करने और देश की विविधता में छिपी एकता को सामने लाने का एक सुंदर प्रयास है।

~ **विकास गुप्ता**, आईएएस
■ *आयुक्त, के.वि.सं.*

वार्षिक वित्त अधिकारी सम्मेलन 2026
हर रुपये का हिसाब होगा डिजिटल, टैली से बदलेगी के.वि.सं. की लेखा प्रणाली

सत्य नारायण गुलिया
■ *संयुक्त आयुक्त (वित्त) के.वि.सं. (मु.)*

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की ओर से 26 से 28 अक्टूबर 2026 तक जीट ग्वालियर में वार्षिक वित्त अधिकारी सम्मेलन 2026 का आयोजन किया गया। इसमें के.वि.सं. के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों और जीट के वित्त प्रमुखों ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्देश्य वित्तीय कार्यों को बेहतर बनाना, अधिकारियों की जानकारी बढ़ाना और लेखा-जोखा रखने के काम में तकनीक का अधिक उपयोग करना था।

इस वर्ष सम्मेलन का मुख्य विषय एक्सेल की जगह टैली के माध्यम से वार्षिक लेखे तैयार करना था। ग्वालियर घोषणा-पत्र के अनुसार वित्त अधिकारियों ने यह संकल्प दोहराया कि संगठन को मिलने वाली और खर्च होने वाली हर राशि का सही हिसाब रखा जाएगा। हर लेन-देन का पूरा रिकॉर्ड रखा जाएगा और प्रत्येक खर्च से जुड़े दस्तावेज तथा समय पर हिसाब का मिलान किया जाएगा।

सम्मेलन में वित्त अधिकारियों ने लेखांकन और वित्तीय प्रबंधन से जुड़े अलग-अलग विषयों पर पावरपॉइंट प्रस्तुतियाँ दीं। अधिकारियों ने अपने अनुभव और जानकारी साझा की। इससे सभी को एक-दूसरे से सीखने और वित्तीय कार्यों को बेहतर ढंग से समझने का अवसर मिला। इस अवसर पर खरीद प्रक्रिया और अन्य वित्तीय विषयों से जुड़े सामान्य सवालों के जवाब देने वाली एक पुस्तिका का भी विमोचन किया गया। यह पुस्तिका अधिकारियों के लिए उपयोगी साबित होगी।

इस सम्मेलन में पहली बार वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए सर्वश्रेष्ठ वित्तीय समूह का पुरस्कार भी दिया गया। यह पुरस्कार के.वि.सं. के वित्तीय समूह-1 (FC-1) को मिला। इस समूह में क्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी, सिलचर और तिनसुकिया शामिल हैं। समूह का चयन वित्त और लेखांकन से जुड़े कार्यों में प्रगति के आधार पर 13 बिंदुओं पर किए गए मूल्यांकन के बाद किया गया।

सम्मेलन में चर्चा और प्रशिक्षण के बाद के.वि.सं. में पहली बार टैली के माध्यम से छह महीने का लेखा-जोखा तैयार किया गया। यह संगठन में लेखांकन कार्यों को अधिक व्यवस्थित और तकनीक आधारित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस सम्मेलन में वित्त अधिकारियों को अपने अनुभव साझा करने, काम के दौरान आने वाली समस्याओं का समाधान खोजने और आपसी तालमेल बढ़ाने का अवसर मिला। साथ ही, सभी कार्यालयों में लेखा-जोखा सही रखने, पारदर्शिता बनाए रखने, वित्तीय नियमों का पालन करने और एक समान प्रक्रिया अपनाने पर जोर दिया गया।



इस प्रकार, वित्त अधिकारी सम्मेलन 2026 के.वि.सं. की लेखांकन प्रणाली को आधुनिक बनाने तथा अधिक कुशल, पारदर्शी और जवाबदेह वित्तीय प्रबंधन व्यवस्था विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुआ।

> "हर रुपये का सही हिसाब,
> हर लेन-देन का पूरा रिकॉर्ड,
> हर पैसे का सही उपयोग"।

श्रमदान से स्वच्छता का संकल्प, पौधारोपण से पर्यावरण संरक्षण का संदेश



पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय मस्जिद मोठ में स्वच्छता ही सेवा 2026 अभियान के अंतर्गत श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग (DoSEL) के सचिव श्री टी.के. अनिल कुमार ने किया। इस अवसर पर केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आयुक्त श्री विकास गुप्ता भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में शिक्षा मंत्रालय और केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अधिकारियों के साथ शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी ने मिलकर स्वच्छता अभियान में श्रमदान किया और अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ एवं सुंदर बनाए रखने की सामूहिक जिम्मेदारी का संदेश दिया।

कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए पौधारोपण भी किया गया। इसके साथ ही ठोस कचरा प्रबंधन पर प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को कचरे के सही निपटान और पर्यावरण के अनुकूल आदतों के प्रति जागरूक किया गया।

'पेन फ्रेंड बॉक्स': फेंकने की नहीं, फिर से इस्तेमाल करने की अपनाएँ आदत



गोपालन टी.
■ *प्राचार्य, पीएम श्री के.वि. आईएनएस, एझिमाला*

हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जहाँ सुविधाओं की आदत ने धीरे-धीरे हमारी जिम्मेदारी की भावना को कम कर दिया है। नई चीजें खरीदने की चाह बढ़ती जा रही है और पुरानी चीजों को दोबारा इस्तेमाल करने की आदत पीछे छूटती जा रही है। एक समय था, जब हम एक पेन का इस्तेमाल कई महीनों तक करते थे। स्याही खत्म होने पर पेन में दोबारा स्याही भरी जाती थी, उसकी निब साफ की जाती थी, क्योंकी उस समय स्याही खत्म होने का मतलब पेन का बेकार हो जाना नहीं होता था। लेकिन आज यह छोटी-सी आदत लगभग खत्म हो गई है। अब हम पेन में स्याही नहीं भरते, बल्कि नया पेन खरीद लेते हैं।



एक खाली पेन को फेंकना हमें बहुत छोटी बात लगती है। लगभग सात ग्राम वजन वाला प्लास्टिक का पेन बिना सोचे-समझे कूड़ेदान में डाल दिया जाता है। आखिर कुछ रुपये में नया पेन मिल जाए, तो रिफिल ढूंढने की जद्दोजहद कौन करे?

लेकिन यह समस्या केवल हमारी व्यक्तिगत आदतों तक सीमित नहीं है। आज बाजार में मिलने वाले कई बॉलपॉइंट पेन इस तरह बनाए जाते हैं कि उनकी स्याही खत्म होने पर रिफिल बदलना भी संभव नहीं होता। सस्ते दाम पर मिलने वाले ये पेन इस्तेमाल के बाद आसानी से फेंक दिए जाते हैं। इस तरह रोजमर्रा में काम आने वाली वस्तु भी प्लास्टिक कचरे का हिस्सा बन जाती है।

कभी हम अपने पेन को संभालकर रखते थे, लेकिन आज हम उन्हें आसानी से फेंक देते हैं। धीरे-धीरे हम लंबे समय तक काम आने वाली चीजों का महत्त्व भूलकर नई चीजें खरीदने को प्राथमिकता देने लगे हैं।

> ***"स्याही खत्म होती है, हम नया पेन खरीद लेते हैं, लेकिन फेंकी गई हर चीज की कीमत हमारी धरती को चुकानी पड़ती है।"***

रोजमर्रा की छोटी आदत और उसका बड़ा प्रभाव

इस समस्या को समझते हुए पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय आईएनएस एझिमाला, केरल ने 'पेन फ्रेंड बॉक्स' कार्यक्रम शुरू किया है। विद्यालय के इको क्लब ने इस पहल का नेतृत्व करते हुए इस्तेमाल के बाद फेंके जाने वाले बॉलपॉइंट पेन इकट्ठा करने का अभियान चलाया है।

कक्षा पांचवीं से बारहवीं तक के विद्यार्थियों को खाली बॉलपॉइंट पेन कूड़ेदान में फेंकने के बजाय विद्यालय में रखे गए विशेष संग्रह बॉक्स में जमा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस पहल के तहत केवल एक वर्ष में 5.8 किलोग्राम इस्तेमाल किए जा चुके प्लास्टिक पेन इकट्ठा किए गए।

जब इको क्लब ने इन आँकड़ों का अध्ययन किया, तो समस्या की गंभीरता सामने आई—

- एक विद्यार्थी एक वर्ष में औसतन 12 बॉलपॉइंट पेन इस्तेमाल करता है।
- एक डिस्पोजेबल पेन का वजन लगभग 7 ग्राम होता है।
- केवल केरल में ही कक्षा पांचवीं से बारहवीं तक के स्कूली बच्चे हर साल बॉलपॉइंट पेन के कारण लगभग 250 टन प्लास्टिक कचरा पैदा कर सकते हैं।

नई पीढ़ी के लिए दोबारा इस्तेमाल होने वाला पेन

विद्यालय ने यह समझा कि केवल जागरूकता फैलाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके लिए व्यावहारिक कदम उठाना भी जरूरी है। इसी दिशा में पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय आईएनएस एझिमाला ने एक सराहनीय पहल करते हुए कक्षा पांचवीं के सभी विद्यार्थियों को पारंपरिक फाउंटेन इंक पेन (स्याही वाले पेन) वितरित करने का अभियान शुरू किया है। इसका उद्देश्य बच्चों में छोटी उम्र से ही पर्यावरण के अनुकूल आदतें विकसित करना है।



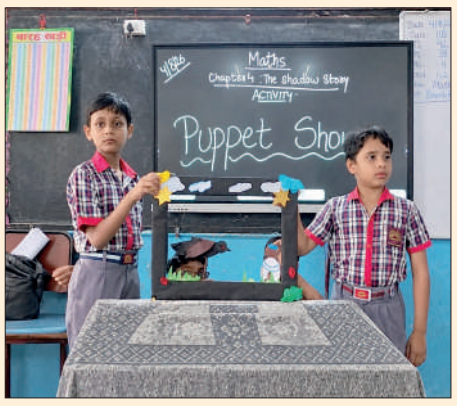
दोबारा स्याही भरकर इस्तेमाल किए जाने वाले पेन अपनाकर विद्यार्थी यह सीख रहे हैं कि सच्ची प्रगति चीजों को आसानी से फेंकने में नहीं, बल्कि उनका समझदारी से इस्तेमाल करने और पर्यावरण को सुरक्षित रखने में है।

श्रेष्ठ कार्यप्रणालियां

कला के रंगों से सीखने का नया अंदाज़
पढ़ाई बनी रोचक और आसान

अजय कुमार मिश्रा
उपायुक्त, के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

जब कला केवल रचनात्मक गतिविधि न रहकर पढ़ाने का माध्यम बन जाती है, तो क्या बदलाव आते हैं? पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2, बेली रोड, पटना में कला-एकीकृत शिक्षण पद्धति के माध्यम से बुनियादी शिक्षा को एक नया रूप दिया जा रहा है। इसमें चित्रकारी, ओरिगामी (कागज को मोड़कर आकृतियाँ बनाना), हस्तकला और कहानी सुनाने जैसी गतिविधियों को रोज़मर्रा के पाठों से जोड़ा जा रहा है। यह नई पहल कठिन और अमूर्त अवधारणाओं को रोचक अनुभवों में बदल देती है, जिससे बच्चे हाथों से काम करके विचारों को समझते हैं, उन्हें जानने का प्रयास करते हैं और अपनी बात व्यक्त करते हैं।



इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि बच्चे केवल सुनकर न सीखें, बल्कि खुद गतिविधियां करके और उनमें भाग लेकर भी सीखें। इससे उनकी समझ बेहतर होती है और पढ़ाई अधिक रोचक बनती है।

हर विषय को रोचक बनाना
गणित में बच्चे कागज मोड़कर अलग-अलग आकृतियाँ बनाते हैं और रंगों की मदद से आकार, सममिति तथा पैटर्न को समझते हैं। इससे गणित के कठिन लगने वाले विषयों को समझना आसान हो जाता है।

भाषा की कक्षाओं में चित्रों वाले शब्द-कार्ड, कठपुतली के खेल और अलग-अलग विषयों पर आधारित प्रदर्शनियों का उपयोग किया जाता है। इन गतिविधियों से बच्चों को नए शब्द सीखने, कहानी सुनाने और अपनी बात सही ढंग से कहने में मदद मिलती है।



इसी तरह, मौसम के अनुसार चित्र बनाना, प्रकृति से जुड़ी कलाकृतियां तैयार करना और त्योहारों पर हस्तकला की गतिविधियां करना बच्चों को पर्यावरण और अपनी संस्कृति के बारे में जानने का अवसर देता है। इससे वे कक्षा में सीखी गई बातों को अपने दैनिक जीवन से जोड़ पाते हैं।

पढ़ाई के साथ अन्य कौशलों का विकास
कागज काटना, मोड़ना और अलग-अलग चीजों को जोड़ने जैसी गतिविधियों से बच्चों के हाथों की पकड़ और छोटे-छोटे काम करने की क्षमता बेहतर होती है। इससे उन्हें आकृतियों और स्थान की समझ भी विकसित करने में मदद मिलती है।

कला के माध्यम से अपनी बात व्यक्त करने का अवसर मिलने से शिक्षण अधिक समावेशी बनता है। इससे अलग-अलग क्षमताओं और सीखने की पसंद वाले बच्चों को भी आत्मविश्वास के साथ गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

रचनात्मकता से बेहतर भविष्य की ओर
इस शिक्षण पद्धति की खास बात यह है कि इसमें कला और पढ़ाई को एक साथ जोड़ा गया है। शिक्षक केवल बच्चों की बनाई हुई कलाकृति को नहीं देखते, बल्कि यह भी समझते हैं कि उन्होंने उसे कैसे बनाया, उसमें कितनी रुचि ली और अपने विचारों को किस तरह प्रस्तुत किया।

बच्चों को केवल समझाने के बजाय उन्हें स्वयं करके सीखने का अवसर दिया जाता है। यह पहल बताती है कि पढ़ाई में नए तरीके अपनाने के लिए हमेशा महंगे या आधुनिक साधनों की जरूरत नहीं होती। सबसे जरूरी बात यह है कि बच्चों को ऐसी गतिविधियां दी जाएं, जिनसे वे विषयों को अच्छी तरह समझ सकें और जो कुछ सीखें, उसका अपने जीवन में उपयोग कर सकें।



वाद-विवाद से निखर रही विद्यार्थियों की सोच और अभिव्यक्ति की क्षमता

ज्योति मीणा
स्नातकोत्तर शिक्षिका (अंग्रेजी), पीएम श्री के.वि. क्र. 1, कोटा

किसी प्रश्न का उत्तर जानना एक बात है, लेकिन अपने उत्तर को सही तर्क और उदाहरणों के साथ समझाना दूसरी बात है। स्कूलों में आमतौर पर विद्यार्थियों को विषयों का ज्ञान देने पर अधिक ध्यान दिया जाता है, जबकि उस विषय को समझना, सवाल पूछना, विचार करना और अपनी बात स्पष्ट रूप से रखना भी उतना ही जरूरी है। शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए तैयार करना नहीं, बल्कि उन्हें जीवन की परिस्थितियों को समझने और सही निर्णय लेने योग्य बनाना भी है।



इसी सोच के साथ पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, कोटा ने 'संरचित कक्षा वाद-विवाद' की शुरुआत की है। इस नई पहल के माध्यम से कक्षा में होने वाली चर्चाओं को विद्यार्थियों के सोचने, समझने और अपनी बात रखने की क्षमता विकसित करने का माध्यम बनाया जा रहा है।

रटने से आगे बढ़कर सोचने और समझने की पहल
इस पहल के अंतर्गत उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थी वर्तमान समय के मुद्दों, साहित्य और पाठ्यक्रम से जुड़े विषयों पर वाद-विवाद में भाग लेते हैं। विद्यार्थियों को दो टीमों में बांटा जाता है, जो किसी विषय के पक्ष और विपक्ष में अपनी बात रखते हैं। इसमें विद्यार्थियों को वक्ता, दूसरे पक्ष के तर्कों का जवाब देने वाले, चर्चा का संचालन करने वाले और मूल्यांकन करने वाले जैसी अलग-अलग जिम्मेदारियां दी जाती हैं।



प्रत्येक वाद-विवाद की शुरुआत अपने विचार रखने से होती है। इसके बाद विद्यार्थी तथ्यों और उदाहरणों के आधार पर तर्क देते हैं, एक-दूसरे के तर्कों का जवाब देते हैं और अंत में अपनी बात रखते हैं। वाद-विवाद से पहले 'थिंक-पेयर-शेयर' गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थी पहले स्वयं किसी विषय पर सोचते हैं, फिर अपने साथी के साथ विचार साझा करते हैं और अंत में उन्हें सबके सामने रखते हैं। शिक्षक इस पूरी गतिविधि में मार्गदर्शन करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी विद्यार्थियों को अपनी बात रखने का अवसर मिले।

असहमति के साथ भी दूसरों का सम्मान करना
इस पहल का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को मंच पर बोलना सिखाना नहीं है, बल्कि उन्हें यह समझाना भी है कि किसी से अलग विचार रखना गलत नहीं है। असहमति होने पर भी दूसरों की बात सुनना और सम्मान करना जरूरी है। विद्यार्थी यह भी सीखते हैं कि किसी बात को सही साबित करने के लिए तेज आवाज नहीं, बल्कि सही तर्क और तथ्यों की आवश्यकता होती है। विद्यार्थियों के बोलने के तरीके, तर्क देने की क्षमता, आत्मविश्वास और टीम के साथ काम करने की योग्यता का मूल्यांकन सहपाठियों, शिक्षकों और स्वयं विद्यार्थियों द्वारा किया जाता है।

इस गतिविधि से विद्यार्थियों की अंग्रेजी बोलने की क्षमता में सुधार हुआ है। साथ ही, उनकी सोचने-समझने की शक्ति बढ़ी है और कक्षा में भागीदारी भी बेहतर हुई है। इससे उन विद्यार्थियों को भी अपनी बात रखने का आत्मविश्वास मिला है, जो शुरुआत में बोलने में झिझकते थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बताई गई अनुभव के माध्यम से सीखने और कौशल विकसित करने की सोच के अनुरूप यह पहल शुरू की गई है। इसे कम संसाधनों में अन्य विषयों और देश के दूसरे केन्द्रीय विद्यालयों में भी अपनाया जा सकता है।

इस पहल की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि विद्यार्थी अब केवल उत्तर याद करने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सवाल पूछना, तर्क करना, दूसरों के विचार सुनना और अपनी समझ के आधार पर सही निष्कर्ष तक पहुँचना सीख रहे हैं। यानी अब उन्हें केवल यह नहीं सिखाया जा रहा कि क्या सोचना है, बल्कि यह भी सिखाया जा रहा है कि कैसे सोचना है।

> एक अभिनव कक्षा अभ्यास, जिसके माध्यम से विद्यार्थी आलोचनात्मक ढंग से सोचना, आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखना और भिन्न विचारों का सम्मान करना सीखते हैं।



अनेक संस्कृतियाँ, अनेक रंग, एक भारत

के.वि.सं. राष्ट्रीय एकता पर्व 2026 में दिखी देश की सांस्कृतिक एकता की अनूठी झलक



डॉ. रितु पल्लवी
सहायक आयुक्त (प्रशि.), के.वि.सं. (मु.)



भारत अनेक भाषाओं, परंपराओं, कलाओं और संस्कृतियों का देश है। हर क्षेत्र की अपनी अलग पहचान और विशेषता है, जो एक साथ मिलकर भारत की एकता और सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाते हैं। इसी भावना को साकार करते हुए केन्द्रीय विद्यालय संगठन के राष्ट्रीय एकता पर्व 2026 में देशभर के विद्यार्थी एक मंच पर जुटे। उन्होंने अपनी रंगारंग प्रस्तुतियों के माध्यम से देश की विविध सांस्कृतिक परंपराओं को प्रस्तुत किया और एकता के सूत्र में बंधे भारत की सुंदर तस्वीर पेश की।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा 30 और 31 अक्टूबर 2026 को डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन सभागार, दिल्ली कैंट में इस दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह आयोजन सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में किया गया, जिनका देश की एकता में योगदान आज भी हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। कार्यक्रम का उद्घाटन भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग की संयुक्त सचिव एवं केन्द्रीय विद्यालय संगठन की उपाध्यक्ष सुश्री प्राची पाण्डेय ने किया।

सभागार में रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, संगीत, नृत्य, नाटक, पारंपरिक कहानी-कथन और चित्रकला जैसी गतिविधियों ने सभी का मन मोह लिया। प्रत्येक प्रस्तुति में देश के अलग-अलग हिस्सों की परंपराओं और कलाओं की झलक देखने को मिली। ये प्रस्तुतियां केवल विद्यार्थियों की प्रतिभा दिखाने का माध्यम नहीं थीं, बल्कि इनके जरिए विद्यार्थियों को दूसरी संस्कृतियों को जानने, नई परंपराओं को समझने और एक-दूसरे से जुड़ाव महसूस करने का अवसर भी मिला।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता ने इस आयोजन को एक नया आयाम दिया। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को भारत की समृद्ध ज्ञान परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत के बारे में अधिक जानने का अवसर मिला। इस प्रकार विभिन्न गतिविधियों के जरिए कला, संस्कृति की समझ और सीखने की भावना को एक मंच पर लाया गया।



राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित यह कार्यक्रम क्लस्टर, क्षेत्रीय और आंचलिक स्तर की प्रतियोगिताओं के बाद आयोजित किया गया। इसमें लगभग 260 विद्यार्थियों और 30 अनुरक्षक शिक्षकों ने भाग लिया। उन्होंने देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों के उत्साह, रचनात्मकता और सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व किया।

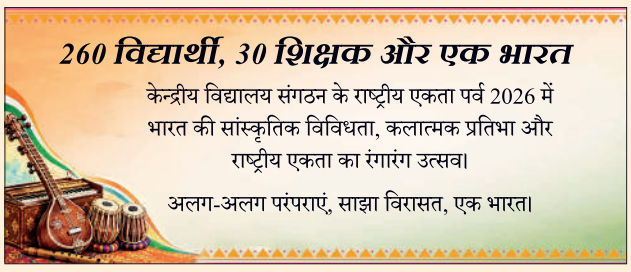
विद्यार्थियों के लिए यह अनुभव केवल मंच पर प्रस्तुति देने तक सीमित नहीं था, बल्कि इस पूरी यात्रा ने उन्हें बहुत कुछ सीखने का अवसर दिया। अलग-अलग क्षेत्रों के विद्यार्थियों के साथ मिलकर तैयारी करने और कार्यक्रम में भाग लेने से उनमें मित्रता, आत्मविश्वास और मिल-जुलकर काम करने की भावना विकसित हुई। साथ ही, उन्हें दूसरों के विचारों और परंपराओं का सम्मान कैसे करें यह भी सीखने को मिला। इस पूरी यात्रा में साथ आए शिक्षकों ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया और उनका उत्साह बढ़ाया।

राष्ट्रीय एकता पर्व केन्द्रीय विद्यालय संगठन की दो प्रमुख पहलों- 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' और 'कला उत्सव' को एक मंच पर लाता है। इसके साथ ही 'समृद्धि' की भावना विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के इस उद्देश्य को और मजबूत बनाती है। ये सभी पहलें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 की सोच को आगे बढ़ाती हैं। इनका उद्देश्य अनुभव के माध्यम से सीखने, विभिन्न संस्कृतियों को समझने और शिक्षा में कला को शामिल करने पर विशेष ध्यान देना है।



अंततः राष्ट्रीय एकता पर्व का संदेश बहुत सरल और महत्वपूर्ण है- भारत की एकता के लिए सभी का एक जैसा होना जरूरी नहीं है। हमारी असली ताकत इस बात में है कि हम एक-दूसरे की भिन्नताओं का सम्मान करें, उन्हें अपनाएं और उनका उत्सव मनाएं। जब विद्यार्थी ऐसे साझा अनुभवों के माध्यम से इस भावना को समझते हैं, तो राष्ट्रीय एकता उनके लिए केवल किताबों में पढ़ने वाला पाठ नहीं रह जाती, बल्कि उनके जीवन का हिस्सा बन जाती है।





संस्कृत प्रवाह

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

भावार्थ

समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो भूभाग (देश) स्थित है, उसे 'भारत' कहते हैं और वहाँ रहने वाली संतानें 'भारती' (भारतीय) कहलाती हैं।



PRAYAAS 2026: 21 केन्द्रीय विद्यालयों के प्रोजेक्ट चयनित

एनसीआरटी की पहल PRAYAAS 2026 के अंतर्गत केन्द्रीय विद्यालय संगठन के 21 केन्द्रीय विद्यालयों के प्रोजेक्ट चयनित किए गए हैं। इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, जिज्ञासा और अनुसंधान की भावना को बढ़ावा देना है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को नए विचारों के साथ प्रयोग करने, वैज्ञानिक विषयों को गहराई से समझने और अपनी रचनात्मक सोच को प्रोजेक्ट के रूप में प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है।यह उपलब्धि विद्यार्थियों की वैज्ञानिक रुचि, नवाचार और खोजपरक सोच को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

नवीनतम प्रकाशन



पढ़ने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

शाला ध्वनि
KVS News
(जुलाई-सितंबर 2026)

विचारणीय विचार

"क्रांति का मार्ग अपनाया जा सकता है, लेकिन क्रांति से समाज को आघात नहीं पहुँचना चाहिए। क्रांति में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है।"

~ सरदार वल्लभभाई पटेल



अक्टूबर 2026 की झलकियाँ

के.वि.सं. के अधिकरियों ने ली सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता की शपथ



केन्द्रीय विद्यालय संगठन में 26 अक्टूबर से 1 नवंबर 2026 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2026 का आयोजन किया गया। 'समृद्धि के लिए सत्यनिष्ठा' विषय पर आयोजित इस सप्ताह का उद्देश्य सार्वजनिक प्रशासन में ईमानदारी, पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिक कार्यप्रणाली को बढ़ावा देना था। इस अवसर पर केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय) के भीष्म सभागार में संगठन के आयुक्त श्री विकास गुप्ता ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई।

सप्ताह के दौरान 30 अक्टूबर 2026 को क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। इसका उद्देश्य सतर्कता से जुड़े विषयों के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा कार्यालयीन कार्यों में नैतिक आचरण और जवाबदेही को मजबूत करना था। इन पहलों के माध्यम से के.वि.सं. ने पूरे संगठन में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और जिम्मेदार प्रशासन की संस्कृति को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

सेवा, अनुशासन और नेतृत्व का दमखम



केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा प्रतिष्ठित राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के अंतर्गत 4 से 8 अक्टूबर 2026 तक देश के सात स्थानों पर राज्य स्तरीय परीक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में केन्द्रीय विद्यालय संगठन के 23 संभागों से 635 स्काउट्स और 542 गाइड्स सहित कुल 1,177 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इन परीक्षण शिविरों का उद्देश्य प्रतिभागियों के स्काउटिंग एवं गाइडिंग कौशल का आकलन करना तथा उनमें अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, टीम भावना और सेवा के प्रति समर्पण जैसे गुणों को विकसित करना था। शिविरों के दौरान युवा स्काउट्स एवं गाइड्स को अपनी प्रतिभा और दक्षता प्रदर्शित करने का अवसर मिला। साथ ही, उन्होंने स्काउटिंग एवं गाइडिंग आंदोलन के मूल सिद्धांतों और मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को भी दर्शाया। यह आयोजन विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, जिम्मेदारी और समाज सेवा की भावना विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल रहा।

सौर ऊर्जा से सशक्त होते विद्यालय के.वि.सं. और एसईसीआई के बीच एमओयू



केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों में सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए 28 अक्टूबर 2026 को सोलर एनर्जी कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (SECI) के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। समझौता ज्ञापन पर केन्द्रीय विद्यालय संगठन की ओर से अपर आयुक्त श्री दीपेश गहलोत (अपर आयुक्त, प्रशा.) तथा SECI की ओर से सहायक महाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष (सोलर) श्री मानस रंजन मिश्रा ने हस्ताक्षर किए और दस्तावेजों का आदान-प्रदान किया।

इस साझेदारी का उद्देश्य विद्यालयों में नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना, पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता कम करना और पर्यावरण अनुकूल कार्यप्रणाली को प्रोत्साहित करना है। यह पहल केन्द्रीय विद्यालयों को हरित परिसर के रूप में विकसित करने और देश के स्वच्छ ऊर्जा विकास में योगदान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

के.वि. के पांच विद्यार्थियों की वैश्विक मंच पर दमदार दस्तक

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पांच प्रतिभाशाली विद्यार्थियों ने अपनी मेहनत और प्रतिभा के दम पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी जगह बनाई है। NAAS-YUVA चयन अभियान 2026 के तहत चुने गए इन पांच विद्यार्थियों ने 20 से 22 अक्टूबर 2026 तक अमेरिका के आयोवा राज्य के डेस मोइनेस में आयोजित प्रतिष्ठित वैश्विक युवा संस्थान (GYI) 2026 में भाग लिया और के.वि.सं. को गौरवान्वित किया।

इन विद्यार्थियों का चयन राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (NAAS) द्वारा आयोजित तीन चरणों की कठिन प्रक्रिया के बाद हुआ। इसमें प्रश्नोत्तरी, शोध कार्य की प्रस्तुति और विशेषज्ञों के साथ साक्षात्कार के माध्यम से विद्यार्थियों की योग्यता और प्रतिभा को परखा गया। इस प्रक्रिया में सफलता हासिल कर इन विद्यार्थियों ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया।



एस. एस. साद्रुस्या
पीएम श्री के. वि. क्रमांक 1, उप्पल
के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद



अपर्णा गणेशन
पीएम श्री के. वि. क्रमांक 2, पुदुचेरी
के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई



खुशी राजपूत
पीएम श्री के. वि. एसपीएम, होशंगाबाद
के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल



शिखर कुमार सिंह
पीएम श्री के. वि. आयुध निर्माणी चांदा
के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई



शुभांशु रंजन
पीएम श्री के. वि. एसपीजी, द्वारका
के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली

इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों को दूसरे देशों के विशेषज्ञों और युवा प्रतिभाओं से बातचीत करने, अपने विचार साझा करने तथा दुनिया के सामने मौजूद चुनौतियों और उनके समाधान के बारे में जानने का अवसर मिला। इस कार्यक्रम से विद्यार्थियों को नई जानकारियां सीखने और अपने विचारों को आगे बढ़ाने में मदद मिली।

यह उपलब्धि दर्शाती है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन अपने विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, नए विचारों को अपनाने की क्षमता और दुनिया को समझने की दृष्टि विकसित करने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है।

नवाचार को मिली उड़ान: के.वि. के विद्यार्थी चले जापान की ओर

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के दो विद्यार्थियों का चयन INSPIRE-MANAK योजना (2023–24 एवं 2024–25) के अंतर्गत 12वीं राष्ट्रीय स्तरीय प्रदर्शनी एवं परियोजना प्रतियोगिता (NLEPC) के लिए किया गया। इन विद्यार्थियों को 12 से 14 अक्टूबर 2026 तक नई दिल्ली के प्रगति मैदान स्थित भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन (ITPO) में आयोजित NLEPC के सम्मान समारोह में पुरस्कृत किया गया।

दोनों विद्यार्थियों का चयन जापान में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए हुआ है। इस उपलब्धि के साथ उन्होंने चयनित 60 प्रतिभागियों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।



पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 3, भुवनेश्वर (क्षेत्रीय कार्यालय भुवनेश्वर) के विद्यार्थी हिरण्मय पति का चयन इस योजना के तहत 'पहाड़ी क्षेत्रों के लिए विशेष उपयोगी छड़ी' नामक नवाचारी परियोजना बनाने के लिए किया गया।



केन्द्रीय विद्यालय तुली, नागालैंड (क्षेत्रीय कार्यालय तिनसुकिया) की छात्रा लाटोंगकुमला का चयन 'पर्यावरण के अनुकूल मोड़कर रखी जा सकने वाली बाँस की छतरी' नामक परियोजना बनाने के लिए किया गया।

चमकते सितारे



किकबॉक्सिंग में अंश का स्वर्णिम प्रदर्शन

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय एनएडी करंजा के विद्यार्थी अंश संदीप सोनकर ने महाराष्ट्र राज्य किकबॉक्सिंग चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीतकर विद्यालय का नाम रोशन किया। उनकी इस उपलब्धि ने न केवल उनकी खेल प्रतिभा को साबित किया, बल्कि उनकी मेहनत, अनुशासन और निरंतर अभ्यास के महत्व को भी दर्शाया।



राष्ट्रीय पटल पर चमके प्रवीर सोलंकी

केन्द्रीय विद्यालय गेल झाबुआ के विद्यार्थी प्रवीर सोलंकी ने नासिक में आयोजित 14वीं जूनियर राष्ट्रीय पेनचाक सिलाट चैंपियनशिप 2026 में स्वर्ण पदक जीतकर विद्यालय का नाम रोशन किया। उन्होंने जूनियर पुरुष टैंडिंग के 83–87 किलोग्राम भार वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान हासिल किया।



पैरा तैराकी में सात्विक की शानदार छलांग

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, वायुसेना स्थल सांबरा, बेलगावी के पूर्व विद्यार्थी सात्विक पाटिल ने जापान के आइची-नागोया में आयोजित 5वें एशियाई पैरा खेल 2026 की पैरा तैराकी प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीतकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत और के.वि.सं. को गौरवान्वित किया। सात्विक ने अपने उत्कृष्ट कौशल, प्रतिभा और कड़े परिश्रम के दम पर यह उपलब्धि हासिल की।

संरक्षक: विकास गुप्ता, *आईएएस*, आयुक्त, के.वि.सं.
प्रधान संपादक: चंदना मंडल, अपर आयुक्त (शै.)
संपादक मंडल: सोमित श्रीवास्तव संयुक्त आयुक्त (शै.), रत्ना पाठक, सहायक शिक्षा अधिकारी, सचिन राठौर, सहायक संपादक
सहभागी: समस्त केन्द्रीय विद्यालय
संपादकीय सलाहकार सुरभि गोयल, कंटेंट राइटर, अमन, कंटेंट राइटर, संजना जांगड़ा, ग्राफिक डिजाइनर
सभी संभाग अपनी टिप्पणी और विशेष स्टोरी निम्न मेल आईडी पर भेज सकते हैं: kvschronicle@gmail.com
© केन्द्रीय विद्यालय संगठन
यह ई-प्रकाशन केवल आंतरिक वितरण हेतु के.वि.सं. (मु.) द्वारा प्रकाशित।